अंक योजना
अति गोपनीय
(केवल आंतरिक और सीमित उपयोग हेतु)
सेकंडरी स्कूल परीक्षा, 2026 2nd बोर्ड परीक्षा
विषय – सामाजिक विज्ञान (087)
पेपर कोड– 32/8/1

सामान्य निर्देश:-	
1.	आप जानते हैं कि परीक्षार्थियों के वास्तविक और सही मूल्यांकन में आकलन प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। मूल्यांकन में एक छोटी सी गलती से गंभीर परिणाम प्रदान कर सकती है। जो उम्मीदवारों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और शिक्षण पेशे को प्रभावित कर सकती हैं। गलतियों से बचने के लिए, यह अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन शुरू करने से पहले, आपको स्पॉट मूल्यांकन दिशानिर्देशों को ध्यान से पढ़ना और समझना चाहिए।
2.	**मूल्यांकन प्रक्रिया गोपनीय नीति का एक हिस्सा है क्योंकि यह आयोजित परीक्षाओं की गोपनीयता, किए गए मूल्यांकन और कई अन्य पहलुओं से संबंधित है। इसका किसी भी तरह से सार्वजनिक रूप से लीक होना परीक्षा प्रणाली के पटरी से उतरने का कारण बन सकता है और लाखों परीक्षार्थियों के जीवन और भविष्य को प्रभावित कर सकता है। इस नीति/दस्तावेज को किसी को भी साझा करना, किसी पत्रिका में प्रकाशित करना और समाचार पत्र/वेबसाइट आदि में छापना भारतीय न्याय संहिता के तहत कार्रवाई को आमंत्रित कर सकता है।**
3.	अंकन योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार मूल्यांकन किया जाना है। यह किसी की अपनी व्याख्या या किसी अन्य विचार के अनुसार नहीं किया जाना चाहिए। अंकन योजना का नियमतः पालन किया जाना चाहिए। हालांकि, मूल्यांकन करते समय, उत्तर जो नवीनतम जानकारी या ज्ञान पर आधारित हैं अथवा नवाचारी हैं, उसका मूल्यांकन यदि वह ठीक है तो उसे उचित अंक प्रदान करें अन्यथा उन्हें अंक नहीं दिए जाएंगे। 10वीं कक्षा में, योग्यता आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय, कृपया दिए गए उत्तर को समझने का प्रयास करें और भले ही उत्तर अंकन योजना से न हो, लेकिन परीक्षार्थियों द्वारा सही योग्यता प्रदर्शित की गई हो तो उसे उचित अंक प्रदान कीजिए।
4.	अकं – योजना में उत्तरो के लिए केवल सुझाए गए मूल्य बिन्दु शामिल हैं । ये केवल दिशा निर्देशों की प्रकृति में है और सम्पूर्ण उत्तर नहीं हैं । विद्यार्थियों की अपनी अभिव्यक्ति हो सकती है और यदि अभिव्यक्ति सही है तो उचित अंक प्रदान किए जाने चाहिए।
5.	मुख्य परीक्षक को पहले दिन प्रत्येक मूल्यांकनकर्ता द्वारा मूल्यांकन की गई पहली पांच उत्तर पुस्तिकाओं को देखना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि मूल्यांकन अंक योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार किया गया है । यदि मूल्यांकन में अंतर है तो उसे चर्चा एवं संवाद के साथ अंतर को समाप्त किया जाना चाहिए। मूल्यांकन के लिए रखी गई शेष उत्तरपुस्तिकाएं यह सुनिश्चित करने के बाद ही दी जाएं कि व्यक्तिगत मूल्यांकनकर्ताओं के मध्य महत्वपूर्ण अंतरों को समाप्त किया जा चुका है।
6.	जब भी उत्तर सही होगा, मूल्यांकनकर्ता (√) चिह्नित करेंगे। गलत उत्तर के लिए 'X' चिह्नित करें। बहुधा मूल्यांकनकर्ता मूल्यांकन करते समय सही प्रकार का चिन्ह नहीं लगाते जिससे यह आभास होता है कि उत्तर सही है और कोई अंक नहीं दिया गया है। यह सबसे आम गलती है जो मूल्यांकनकर्ता लगातार कर रहे हैं।
7.	यदि किसी प्रश्न के भाग हैं, तो कृपया प्रत्येक भाग के लिए दाईं ओर अंक दें। प्रश्न के विभिन्न भागों के लिए दिए गए अंकों को जोड़ दिया जाना चाहिए और बाएं हाथ के मार्जिन में लिखा जाना चाहिए और घेरे में लिखा जाना चाहिए। इसका सख्ती से अनुपालन किया जाना आवश्यक है।
8.	यदि किसी प्रश्न में कोई भाग नहीं है, तो बाएं हाथ के मार्जिन में अंक दिए जाने चाहिए और उन्हें घेरे में लिखा जाना चाहिए। इसका सख्ती से अनुपालन किया जाना आवश्यक है।
9.	यदि किसी परीक्षार्थी ने एक प्रश्न को दुबारा हल किया है , तो अधिक अंक वाले प्रयास की गणना मूल्याकंन के लिए किया जाना चाहिए। अन्य उत्तर के अंक के लिए अतिरिक्त प्रयास लिखिए।
10.	एक ही प्रकार की गलतियों के लिए संचयी प्रभाव से अंक नहीं काटा जाए। इसके लिए लिए केवल एक बार अंक काटा जाएगा।

11.	अंकों का एक पूर्ण पैमाने .....80..... (उदाहरण प्रश्न पत्र में दिए गए 70/60/50/40/30 अंक) का उपयोग किया जाना है। कृपया पूर्ण अंक देने में संकोच न करें यदि उत्तर इसके योग्य है।
12.	प्रत्येक परीक्षक को आवश्यक रूप से पूरे कार्य घंटों अर्थात प्रतिदिन 8 घंटे के लिए मूल्यांकन कार्य करना होता है और मुख्य विषयों में प्रति दिन 20 उत्तर पुस्तिकाओं और अन्य विषयों में प्रति दिन 25 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करना होता है (विवरण स्पॉट दिशानिर्देशों में दिया गया है)। यह कम किए गए पाठ्यक्रम और प्रश्न पत्र में प्रश्नों की संख्या को देखते हुए है।
13.	सुनिश्चित करें कि पूर्व में परीक्षक द्वारा की गई निम्नलिखित सामान्य प्रकार की त्रुटियों को आप नहीं दोहराएँ: • उत्तर या उसके किसी भाग को उत्तर पुस्तिका में बिना मूल्यांकन के छोड़ना। • किसी उत्तर के लिए निश्चित किए गए अंक से अधिक अंक प्रदान करना। • एक उत्तर पर दिए गए अंकों का गलत योग। • उत्तर पुस्तिका के आंतरिक पृष्ठों से शीर्षक पृष्ठ पर अंकों का गलत मिलान। • शीर्षक पृष्ठ पर प्रश्नवार गलत योग। • शीर्षक पृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का गलत योग। • गलत कुल योग। • शब्दों और अंकों में अंक का मिलान नहीं होना। • उत्तरपुस्तिका से ऑनलाइन अवॉर्ड सूची में अंकों का गलत स्थानान्तरण। उत्तर सही के रूप में चिह्नित हैं, लेकिन अंक नहीं दिए गए हैं। (सुनिश्चित करें कि सही सही का निशान सही और स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। यह केवल एक पंक्ति होनी चाहिए। गलत उत्तर के लिए X के साथ भी ऐसा ही है।) उत्तर के आधे या एक भाग को सही और शेष को गलत के रूप में चिह्नित किया गया, लेकिन कोई अंक नहीं दिया गया।
14.	उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते समय यदि उत्तर पूरी तरह से गलत पाया जाता है, तो इसे क्रॉस (X) के रूप में चिह्नित किया जाना चाहिए और शून्य (0) अंक दिए जाने चाहिए।
15.	किसी भी अमूल्यांकित हिस्से, शीर्षक पृष्ठ पर अंक न ले जाना, या उम्मीदवार द्वारा पाई गई कुल त्रुटि, मूल्यांकन कार्य में लगे सभी कर्मियों और बोर्ड की प्रतिष्ठा को भी नुकसान पहुंचाएगा। इसलिए, सभी संबंधितों की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए, यह फिर से दोहराया जाता है कि निर्देशों का सावधानीपूर्वक और विवेकपूर्ण पालन किया जाए।
16.	वास्तविक मूल्यांकन शुरू करने से पहले परीक्षकों को स्पॉट मूल्यांकन के लिए दिशा–निर्देशों में दिए गए दिशा–निर्देशों से खुद को परिचित करना चाहिए।
17.	प्रत्येक परीक्षक यह भी सुनिश्चित करेगा कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन किया गया है, अंक शीर्षक पृष्ठ पर ले जाया गया है, सही ढंग से कुल और अंकों और शब्दों में लिखा गया है।.
18.	बोर्ड उम्मीदवारों को आरटीआई आवेदन में अनुरोध पर उत्तर पुस्तिका की फोटोकॉपी प्राप्त करने की अनुमति देता है और प्रसंस्करण शुल्क के भुगतान पर पुनर्मूल्यांकन प्रक्रिया के एक भाग के रूप में अलग से भी। परिक्षक / अतिरिक्त मुख्य परीक्षको को पुनः स्मरण कराया जाता है कि वे सुनिश्चित करे कि मूल्यांकन अंक योजना में दिए गए मूल्य बिन्दुओं के अनुसार ही किया गया है।
19.	यदि कोई अभ्यर्थी ऐसे प्रश्न में दोनों विकल्पों/वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर देता हैं। जहाँ केवल एक विकल्प/वैकल्पिक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है, तो परीक्षक दोनों विकल्पों के लिए अंक प्रदान करेगा। मूल्यांकन प्रणाली दोनों अंकों में से अधिक अंक को स्वीकार करेगी और दूसरे उत्तर को स्वीकार करेगी।
20.	दो विकल्पों/वैकल्पिक प्रश्नों वाले प्रश्न में यदि अभ्यर्थी ने केवल एक विकल्प का उत्तर दिया है, तो परीक्षक उस विकल्प के सामने NA (उत्तर नहीं दिया गया) अंकित करेगा। जिसका उत्तर अभ्यर्थी द्वारा नहीं दिया गया।

अंक योजना
सामाजिक विज्ञान (विषय कोड - 087)
(पेपर कोड: 32/8/1)

प्रश्न सं.	अपेक्षित मूल्य बिंदु	अंक
	खंड-क **(इतिहास)**	**20**
1.	(B) ऑस्ट्रिया पृ.-10	**1**
2.	(C) शांति की चाह पृ.-24 **केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न सं. 2 के स्थान पर** (C) काइज़र विलियम प्रथम पृ.-19	**1** **1**
3.	(D) IV, III, I, II पृ.-31	**1**
4.	(A) लुई सेबेस्तिएँ मर्सिए पृ.-115	**1**
5.	**बौद्ध धर्म के विस्तार में प्राचीन 'सिल्क मार्ग' के योगदान को स्पष्ट कीजिए।** (i) आधुनिक काल से पहले के युग में दुनिया के दूर-दूर स्थित भागों के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संपर्कों का सबसे जीवंत उदाहरण सिल्क मार्ग के रूप में दिखाई देता है। (ii) पूर्वी भारत में उपजा बौद्ध धर्म सिल्क मार्ग की विविध शाखाओं से कई दिशाओं में फैल गया। (iii) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पृ. 54	**2x1=2**
6. (a)	**उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में यूरोप में राष्ट्र के विचार के निर्माण में संस्कृति की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।** (i) राष्ट्र के विचार के निर्माण में संस्कृति ने एक अहम भूमिका निभाई। कला, काव्य, कहानियों-किस्सों और संगीत ने राष्ट्रीय भावनाओं को गढने और व्यक्त करने में सहयोग दिया। (ii) रुमानिवाद एक ऐसा सांस्कृतिक आन्दोलन था जो एक ख़ास तरह की राष्ट्रीय भावना का विकास करना चाहता था। उनका प्रयास था कि एक साझा- सामूहिक विरासत की अनुभूति और एक साझा सांस्कृतिक अतीत को राष्ट्र का आधार बनाया जाय। (iii) जर्मन दार्शनिक योहान गॉटफ्रीड हर्डर जैसे रोमांटिक चिंतकों ने दावा किया कि सच्ची जर्मन संस्कृति उसके आम लोगों में निहित थी। (iv) राष्ट्र की सच्ची आत्मा लोक-गीतों, जन काव्य और लोक नृत्यों से प्रकट होती थी। (v) लोक संस्कृति के इन स्वरूपों को एकत्र और अंकित करना राष्ट्र के निर्माण की परियोजना के लिए आवश्यक थे। (vi) स्थानीय बोलियों पर बल और स्थानीय लोक साहित्यों को एकत्र करने का उद्देश्य केवल प्राचीन राष्ट्रीय भावना को वापस लाना नहीं था बल्कि आधुनिक राष्ट्रीय सन्देश को ज्यादा लोगों तक पहुंचाना था जिनमें से अधिकाँश निरक्षर थे। (vii) कैरोल कुर्पिंस्की ने राष्ट्रीय संघर्ष का अपने ओपेरा और संगीत से गुणगान किया और पोलोनेज़ और माज़ुरका जैसे लोक नृत्यों को राष्ट्रवादी प्रतीकों में बदल दिया।	**3x1=3**

	(viii) भाषा ने भी राष्ट्रीय भावनाओं के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पोलैंड में पोलिश भाषा रूसी प्रभुत्व संघर्ष के प्रतीक के रूप में देखी जाने लगी। (ix) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** **पृ.-13**	
	अथवा	
6 (b)	**1914 में यूरोप को प्रथम विश्व युद्ध की ओर ले जाने में साम्राज्यवाद की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।** (i) दुनिया के कई देश जो उन्नीसवीं सदी में यूरोपियन ताकतों के गुलाम बन गए थे, उन्होंने साम्राज्यवाद के दबदबे का विरोध करना शुरू कर दिया। (ii) प्रमुख यूरोपीय शक्तियों ने अपने साम्राज्यवादी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अधीन लोगों की राष्टवादी आकांक्षाओं का इस्तेमाल किया। (iii) बाल्कन भौगोलिक और जातीय विविधता वाला क्षेत्र था, जो ऑटोमन साम्राज्य के नियंत्रण में था। (iv) बाल्कन के लोगों ने आज़ादी या राजनीतिक अधिकारों के अपने दावों को राष्ट्रीयता का आधार दिया। (v) इस समय यूरोपीय शक्तियों के बीच व्यापार और उपनिवेशों के साथ नौसैनिक और सैन्य ताकतों के लिए गहरी प्रतिस्पर्धा थी। (vi) रूस, जर्मनी, इंग्लैंड, ऑस्ट्रो-हंगरी जैसी बड़ी यूरोपीय ताकतें यूरोप के बाल्कन इलाके पर अन्य शक्तिओं की पकड़ को कमजोर करके क्षेत्र में अपने प्रभाव को बढ़ाना चाहते थे। (vii) इससे इस इलाके में कई युद्ध हुए और अंततः प्रथम विश्व युद्ध हुआ। साम्राज्यवाद के साथ जुड़कर राष्ट्रवाद 1914 में यूरोप को महाविपदा की और ले गया। (viii) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पृ.- 26-27	**3x1=3**
7. (a)	**आदिवासी किसानों ने महात्मा गांधी के संदेश और उनके स्वराज के विचार को किस तरह समझा? स्पष्ट कीजिए।** (i) आदिवासी किसानों ने महात्मा गांधी के संदेश और स्वराज के विचार को अपने तरीके से समझा। (ii) आंध्र प्रदेश की गुडेम पहाड़ियों में 1920 के दशक की शुरुआत में एक उग्र गुरिल्ला आंदोलन फैल गया। (iii) अनेक वन्य क्षेत्रों में अंग्रेजी सरकार ने लोगों के दाखिल होने पर पाबंदी लगा दी थी। लोग इन जंगलों में न तो मवेशियों को चरा सकते थे ना हीं जलावन के लिए लकड़ी और फल बीन सकते थे। (iv) इससे पहाड़ी लोग परेशान और गुस्सा थे क्योंकि ना केवल उनकी रोज़ी-रोटी पर असर पड़ रहा था बल्कि उनके परम्परागत अधिकार भी छीने जा सकते थे और पारंपरिक अधिकारों को नकारा जा रहा था। (v) उनका नेतृत्व करने वाले व्यक्ति अल्लूरी सीताराम राजू थे। (vi) राजू महात्मा गांधी और असहयोग आन्दोलन से प्रेरित थे, परंतु वे अहिंसा में विश्वास नहीं रखते थे। (vii) गुडेम विद्रोहियों ने पुलिस स्टेशनों पर हमला किया, ब्रिटिश अधिकारियों को मारने की कोशिश की और स्वराज पाने के लिए गुरिल्ला युद्ध किया। (viii) जब आदिवासियों ने गांधीजी के नाम का नारा लगाया और 'स्वतंत्र भारत' की हुँकार भरी तो वे एक अखिल भारतीय आन्दोलन से भी भावनात्मक स्तर पर जुड़े हुए थे।	**5x1=5**

	(ix) जब उन्होंने महात्मा गांधी के नाम पर काम किया, या अपने आंदोलन को कांग्रेस के आंदोलन से जोड़ा, तो वे एक ऐसे आंदोलन से जुड़ रहे थे जो उनके इलाके तक ही सीमित नहीं था। (x) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं पाँच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पृ.-36	
	अथवा	
7(b)	**बागान मजदूरों ने महात्मा गांधी के सन्देश और उनके स्वराज के विचार को किस तरह समझा? स्पष्ट कीजिए।** (i) असम के बागानी मजदूरों के लिए महात्मा गांधी के विचारों और स्वराज की अवधारणा के लिए अपनी समझ थी। (ii) असम के बागान मज़दूरों के लिए आज़ादी का मतलब यह था कि वे उन चारदीवारियों से जब चाहें आ-जा सकते हैं जिनमें उनको बंद करके रखा था। उनके लिए आज़ादी का मतलब था कि वे अपने गाँवों से संपर्क रख पाएंगे। (iii) 1859 के इनलैंड इमिग्रेशन एक्ट के तहत, बागान में काम करने वाले मज़दूरों को बिना इजाज़त के चाय बागान छोड़ने की इजाज़त नहीं थी, और असल में उन्हें ऐसी इजाज़त बहुत कम दी जाती थी। (iv) जब उन्होंने असहयोग आंदोलन के बारे में सुना, तो हज़ारों मज़दूर अपने अधिकारियों की अवहेलना करने लगे, उन्होंने बागान छोड़ दी और घर को चल दिए। (v) उनको लगता था कि अब गांधी राज आ रहा है इसलिए सबको गाँव में जमीन मिल जायेगी जाएगी। (vi) उनके लिए स्वराज एक ऐसे युग का द्योतक था जब सारे कष्ट और मुसीबतें ख़त्म हो जायेंगी। (vii) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं पाँच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पृ.-36	**5x1=5**
8.	**दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:** **छपाई भारत आई** प्रिंटिंग प्रेस पहले-पहल सोलहवीं सदी के मध्य में भारत के गोवा में पुर्तगाली धर्म-प्रचारकों के साथ आया। जेसुइट पुजारियों ने कोंकणी सीखी और कई सारी पुस्तिकाएँ छापीं। 1674 तक कोंकणी और कन्नड़ भाषाओं में लगभग 50 किताबें छप चुकी थीं। कैथलिक पुजारियों ने 1579 में कोचीन में पहली तमिल किताब छापी, और 1713 में पहली मलयालम किताब छापने वाले भी वही थे। डच प्रोटेस्टेंट धर्म-प्रचारकों ने 32 तमिल किताबें छापीं, जिनमें से कई पुरानी किताबों का अनुवाद थीं। अंग्रेज़ी-भाषी प्रेस भारत में काफ़ी देर तक विकास नहीं कर पाया था, यद्यपि इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने सत्रहवीं सदी के अंत तक छापेख़ाने का आयात शुरू कर दिया था। **(8.1) भारत में मुद्रण तकनीकी आने से पहले छपाई के तरीके का उलेख कीजिए।** (1) - हस्तलिखित पांडुलिपि **(8.2) पाश्चात्य धर्म-प्रचारकों ने भारत में मुद्रण को क्यों महत्व दिया?** (1) - वे ईसाई धर्म का प्रसार करना चाहते थे। **(8.3) भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में मुद्रण की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।** (2X1=2) (i) प्रिंट ने भारत के अलग-अलग हिस्सों में लोगों को जोड़ा।	**1+1+2 =4**

	(ii) अखबारों ने एक जगह से दूसरी जगह खबरें पहुंचाईं और विभिन्न हिस्सों को पूरे भारत से जोड़ने का काम भी किया। (iii) कई अखबारों ने लोगों में राष्ट्रवादी भावना फैलाई। (iv) राजा राम मोहन राय जैसे समाज सुधारकों ने समाज में सुधार और जागरूकता फैलाने के लिए किताबें छापीं। (v) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।**	
9.	**कृपया संलग्न मानचित्र देखिए।** **केवल दृष्टिबाधित उम्मीदवारों के लिए प्रश्न संख्या 9 के स्थान पर** 9.1 नागपुर 9.2 अहमदाबाद	**2x1=2**
	खंड-ख **(भूगोल)**	**20**
10.	(B) बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान- मध्य प्रदेश. पृ.-15	**1**
11.	(D) रक्तहीन क्रांति पृ.-39	**1**
12.	(C) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है। पृ. 8	**1**
13.	(C) केवल I, II और IV सही हैं। पृ.-50	**1**
14.	(D) III, I, IV, II पृ.-53	**1**
15.	**"संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए नियोजन एक सर्वमान्य रणनीति है।" भारत के सन्दर्भ में उपयुक्त उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए।** (i) भारत जैसे देश में जहां संसाधनों की उपलब्धता में बहुत अधिक विविधता है संसाधन नियोजन अत्यधिक महत्वपूर्ण है। (ii) यहाँ ऐसे प्रदेश हैं जहां एक तरह के संसाधनों की प्रचुरता है, परंतु दूसरे तरह के संसाधनों की कमी है। (iii) कुछ ऐसे प्रदेश भी हैं जो संसाधनों की उपलब्धता के सन्दर्भ में आत्मनिर्भर हैं और कुछ ऐसे प्रदेश हैं जहां महत्वपूर्ण संसाधनों का बहुत अभाव है। (iv) संतुलित संसाधन नियोजन मानव जीवन की गुणवत्ता और विश्व शांति के लिए आवश्यक हो गया है। (v) हर तरह के जीवन के सततपोषणीय अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संसाधनों के उपयोग की योजना बनाना अति आवश्यक है। (vi) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं तीन बिन्दुओं की पुष्टि अपेक्षित है।** पृष्ठ-2	**3x1=3**

16. (a)	**भारत में सूचना प्रद्यौगिकी तथा इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।** (i) इलेक्ट्रॉनिक उद्योग के अंतर्गत आने वाले उत्पादों में ट्रांसिस्टर से लेकर टेलीविजन, टेलीफोन, सेलुलर टेलिकॉम आदि उपकरण बनाए जाते हैं। (ii) इस उद्योग का एक प्रमुख प्रभाव रोज़गार सृजन पर पड़ा है। (iii) हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर में लगातार हो रही वृद्धि भारत में इस उद्योग की सफलता की कुंजी है। (iv) यह टेलिकॉम उद्योग की कई जरूरतों को पूरा करते हैं। (v) बेंगलुरु, नोएडा, मुंबई, दिल्ली, हैदराबाद आदि इलेक्ट्रॉनिक सामानों के उत्पादन के प्रमुख केन्द्रों के रूप में उभरे हैं। (vi) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं पाँच बिन्दुओं का वर्णन अपेक्षित है।** पृष्ठ-65	**5x1=5**
	अथवा	
16. (b)	**भारत में रसायन उद्योगों की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।** (i) भारत में रसायन उद्योग तेज़ी से विकसित हो रहा है और फ़ैल रहा है। (ii) इसमें लघु तथा वृहद् दोनों प्रकार की विनिर्माण इकाइयां शामिल हैं। (iii) अकार्बनिक और कार्बनिक दोनों ही क्षेत्रों में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई है। (iv) अकार्बनिक रसायनों में सल्फ्यूरिक अम्ल, नाइट्रिक अम्ल, क्षार, सोडा ऐश और कॉस्टिक सोडा आदि शामिल हैं। (v) रसायन उद्योग अपने आप में एक बड़ा उपभोक्ता भी है। (vi) आधारभूत रसायन एक प्रक्रिया द्वारा अन्य रसायन उत्पन्न करते हैं जिनका उपयोग औद्योगिक अनुप्रयोग, कृषि अथवा उपभोक्ता बाज़ारों के लिए किया जाता है। (vii) ये उद्योग पूरे देश में बड़े पैमाने पर फैले हुए हैं। (viii) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं पाँच बिन्दुओं का वर्णन अपेक्षित है।** पृष्ठ-64	**5x1=5**
17.	**दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:** **बाँध** **बाँध** बहते जल को रोकने, दिशा देने या बहाव कम करने के लिए खड़ी की गई बाधा है जो आमतौर पर जलाशय, झील अथवा जलभरण बनाती हैं । "बाँध" का अर्थ जलाशय से लिया जाता है न कि इसके ढाँचे से । अधिकतर बाँधों में एक ढलवाँ हिस्सा होता है जिसके ऊपर से या अन्दर से जल रुक-रुक कर या लगातार बहता है । बाँधों का वर्गीकरण उनकी संरचना और उद्देश्य या ऊँचाई के अनुसार किया जाता है । संरचना और उनमें प्रयुक्त पदार्थों के आधार पर बाँधों को लकड़ी के बाँध, तटबंध बाँध या पक्का बाँध के अलावा कई उपवर्गों में बाँटा जा सकता है । ऊँचाई के अनुसार बाँधों को बड़े बाँध और मुख्य बाँध या नीचे बाँध, मध्यम ऊँचाई बाँध और उच्च बाँधों में वर्गीकृत किया जा सकता है ।	**1+1+2 =4**

	(17.1) बांध शब्द को परिभाषित कीजिए। (1) - बांध बहते जल को रोकने, दिशा देने या बहाव कम करने के लिए की गई बाधा है जो आम तौर पर जलाशय. झील अथवा जलभरण बनाती है। **(17.2) जल प्रबंधन में बांध किस प्रकार सहायक हैं?** (1) - बांध, जल के बहाव को को नियंत्रित करते हैं और नहरों के ज़रिए सिंचाई के लिए पानी देते हैं। **(17.3) बांधों को बहुउद्देशीय परियोजना क्यों कहा जाता है?** **(2X1=2)** (i) बांध बाढ़ के पानी को नियंत्रित करते हैं। (ii) नहरों के ज़रिए, बांध खेती के लिए पानी देते हैं। (iii) वे बिजली उत्पादन का एक स्रोत हैं। (iv) बांध घरेलू और औद्योगिक इस्तेमाल के लिए पानी उपलब्ध करवाते हैं। (v) बांध आतंरिक नौचालन की सुविधा देते हैं। (vi) बाँध मछली पालन को बढ़ावा देते हैं। (vii) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।**	
18.	**कृपया संलग्न मानचित्र देखिए** **केवल दृष्टिबाधित उम्मीदवारों के लिए प्रश्न सं. 18 के स्थान पर** **(किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।)** 18.1 भिलाई 18.2 नोएडा 18.3 विशाखापट्टनम 18.4 चेन्नई/मीनमबक्कम	**3x1=3**
	खंड-ग **(राजनीति शास्त्र)**	**20**
19.	(A) शासन के विभिन्न अंगों में सत्ता का बँटवारा पृ.-8	**1**
20.	(B) फ्रेंच पृ.-2	**1**
21.	(C) उत्तर और पूर्वी पृ.-3 **केवल दृष्टिबाधित उम्मीदवारों के लिए प्रश्न सं. 21 के स्थान पर** (D) सिंहली पृ.-2	**1** **1**
22.	(D) नगरपालिका पृ.-25	**1**
23.	(C) a-ii, b-iv, c-i, d-iii पृ.-56	**1**

24.	**भारत में राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका को बढ़ाने के लिए कोई दो उपाय सुझाइए।** (i) राजनीतिक दलों के लिए महिलाओं को समान सदस्यता देना अनिवार्य किया जाना चाहिए। (ii) राजनीतिक दलों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं को शामिल करना चाहिए। (iii) राजनीतिक दलों में महिलाओं को नेतृत्व की भूमिकाएँ दी जानी चाहिए। (iv) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पृष्ठ-34	**2x1=2**
25. (a)	**लोकतंत्र किस प्रकार एक उत्तरदायी शासन व्यवस्था है? स्पष्ट कीजिए।** (i) लोकतंत्र एक ऐसी सरकार बनाता है जो नागरिकों के प्रति जवाबदेह होती है और नागरिकों की ज़रूरतों और उम्मीदों के प्रति संवेदनशील होती है। (ii) लोकतांत्रिक सरकार एक वैध सरकार होती है। (iii) लोकतंत्र विचार-विमर्श और चर्चा के विचार पर आधारित होता है। (iv) लोकतंत्र एक ऐसी सरकार बनाता है जो कोई भी फ़ैसला लेने से पहले उचित प्रक्रियाओं का पालन करती है। (v) नियमित, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव लोकतंत्र को सरकार का एक ज़िम्मेदार रूप बनाते हैं। (vi) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पृष्ठ-65	**2x1=2**
	अथवा	
(b)	**लोकतंत्र किस प्रकार आर्थिक असमानताओं को कम करने में सफल है? स्पष्ट कीजिए।** (i) लोकतंत्र समानता के सिद्धांत पर आधारित है। (ii) लोकतंत्र आर्थिक विकास के लिए समान अवसर प्रदान करता है। (iii) लोकतांत्रिक सरकारें कल्याणकारी सरकारें होती हैं और वे विभिन्न योजनाओं के माध्यम से लोगों को प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। (iv) लोकतांत्रिक सरकारें संसाधनों के न्यायसंगत वितरण की दिशा में कार्य करती हैं। (v) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पृष्ठ-69	**2x1=2**
26.	**"राजनीतिक प्रतिनिधित्व के मामले में'बहुदलीय व्यवस्था' बेहतर है।" भारत के संदर्भ में इस कथन की पुष्टि कीजिए।** (i) भारत जैसे सामाजिक रूप से विविधतापूर्ण देशों के लिए बहु-दलीय प्रणाली फायदेमंद है। (ii) यह प्रणाली विभिन्न हितों और विचारों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अवसर प्रदान करती है। (iii) बहु-दलीय प्रणाली समाज के विभिन्न वर्गों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। (iv) यह विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं को प्रतिनिधित्व मिलने का अवसर प्रदान करती है। (v) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पेज-51	**3x1=3**
27.	**"महिलाओं के साथ समानता का व्यवहार लोकतंत्र की ज़रूरी शर्त है।" इस कथन की परख कीजिए।** (i) लोकतंत्र समानता के सिद्धांत पर आधारित है। (ii) लोकतंत्र में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार का अभ्यास लैंगिक समानता सुनिश्चित करता है।	**3x1=3**

	(iii) एक बार जब समानता के सिद्धांत को मान्यता मिल जाती है, तो महिलाओं के लिए वैधानिक और नैतिक रूप से गलत मान्यताओं और व्यवहारों के खिलाफ संघर्ष करना आसान हो जाता है। (iv) महिलाओं की आबादी कुल आबादी का आधा हिस्सा हैं; महिलाओं के साथ समान व्यवहार किए बिना लोकतंत्र समानता के अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। (v) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पृष्ठ-71	
28. (a)	**भारत के संदर्भ में संघीय शासन व्यवस्था की विशेषताओं की परख कीजिए।** (i) भारत में सरकार के तीन स्तर हैं - केंद्र, राज्य और स्थानीय निकाय। (ii) अलग-अलग स्तर की सरकारें एक हीं नागरिक समूहों पर शासन करती हैं पर उनका अपना-अपना अधिकार क्षेत्र होता है। (iii) विभिन्न स्तरों की सरकारों के अधिकार क्षेत्र तीन सूचियों के माध्यम से संविधान में स्पष्ट रूप से वर्णित है। (iv) संविधान के मौलिक प्रावधानों को किसी एक स्तर की सरकार अकेले नहीं बदल सकती। (v) वित्तीय स्वायत्ता निश्चित करने के लिए विभिन्न स्तर की सरकारों के लिए राजस्व के अलग-अलग स्रोत निर्धारित है। (vi) अदालतों को संविधान और विभिन्न स्तरों की सरकारों के अधिकारों की व्याख्या करने का अधिकार है। (vii) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं पाँच बिन्दुओं की परख अपेक्षित है।** पेज-15	**5x1=5**
	अथवा	
(b)	**1992 के संविधान संशोधन द्वारा स्थानीय स्वशासन के लिए किए गए प्रावधानों की परख कीजिए।** (i) स्थानीय सरकारी निकायों के लिए नियमित चुनाव करवाना संवैधानिक रूप से अनिवार्य है। (ii) निर्वाचित स्वशासी निकायों के सदस्य तथा पदाधिकारियों के पदों में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और पिछड़ी जातियों के लिए सीटें आरक्षित हैं। (iii) सभी पदों में से कम से कम एक-तिहाई पद महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। (iv) पंचायत और नगरपालिका चुनाव करवाने के लिए प्रत्येक राज्य में 'राज्य चुनाव आयोग' नामक एक स्वतंत्र संस्था का गठन किया गया है। (v) राज्य सरकारों को अपने राजस्व और अधिकारों का कुछ हिस्सा इन स्थानीय स्वशासी निकायों को देना पड़ता है। (vi) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं पाँच बिन्दुओं की परख अपेक्षित है।** पृ.-24	**5x1=5**
	खंड-घ **(अर्थशास्त्र)**	**20**
29.	(A) सात वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों में साक्षर जनसँख्या का अनुपात। पृ.-10	**1**
30.	(B) प्रति व्यक्ति आय, शिक्षा का स्तर और स्वास्थ्य की स्थिति। पृ.-13	**1**
31.	(A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है। पृ.-21	**1**

32.	(D) 2,34,000 करोड़ पृ.-23	**1**
33.	(C) जमींदार पृ.-50	**1**
34.	(B) घरेलू उत्पादकों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से संरक्षण के लिए। पृ.-64	**1**
35.	**धारणीय विकास क्यों आवश्यक है? स्पष्ट कीजिए।** (i) संसाधन सीमित हैं और उन्हें भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया जाना चाहिए। (ii) पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए सतत विकास आवश्यक है। (iii) पर्यावरणीय क्षरण को रोकने के लिए सतत विकास आवश्यक है। (iv) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पृष्ठ-14	**2x1=2**
36.	**"सूचना प्रौद्योगिकी के प्रसार के बिना वैश्वीकरण असंभव है।" उपयुक्त तर्कों के साथ इस कथन की परख कीजिए।** (i) सूचना प्रौद्योगिकी ने दूरसंचार, कंप्यूटर और इंटरनेट के क्षेत्रों में सुधार किया है। (ii) दुनिया भर में एक-दूसरे से संपर्क करने के लिए विभिन्न सुविधाओं (टेलीग्राफ़, टेलीफ़ोन - जिसमें मोबाइल फ़ोन भी शामिल हैं - और फ़ैक्स) का उपयोग किया जाता है। (iii) सूचना प्रौद्योगिकी जानकारी तक तत्काल पहुँच बनाने में मदद करती है। (iv) यह दूरदराज के क्षेत्रों से संवाद करने में मदद करती है। (v) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पृष्ठ-63	**3x1=3**
37. (a)	**भारत के अर्थव्यवस्था के सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रक का उदाहरणों सहित अंतर स्पष्ट कीजिए।** (i) सार्वजनिक क्षेत्रक में ज़्यादातर परिसंपत्तियों पर सरकार का स्वामित्व होता हैं, जबकि निजी क्षेत्रक में परिसंपत्तियों पर स्वामित्व किसी एकल व्यक्ति या कंपनी काहोता हैं। (ii) निजी क्षेत्र की गतिविधियाँ लाभ कमाने के उद्देश्य से निर्देशित होती हैं, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र लोगों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित करता है। (iii) जिन गतिविधियों में ज़्यादा खर्च की ज़रूरत होती है, उन्हें निजी क्षेत्रक द्वारा नहीं, बल्कि सार्वजनिक क्षेत्रक द्वारा किया जा सकता है। (iv) बुनियादी ढाँचे का विकास सार्वजनिक क्षेत्रक द्वारा प्रबंधित किया जाता है, क्योंकि उनके पास भारी मात्रा में धन उपलब्ध होता है, जिसकी निजी क्षेत्रक में कमी होती है। (v) निजी क्षेत्र समाज को समग्र रूप से ज़रूरी कई चीज़ें उचित कीमत पर उपलब्ध नहीं कराएगा, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र उन्हें उपलब्ध कराएगा। (vi) ऐसी कई गतिविधियाँ हैं जो सरकार की प्राथमिक ज़िम्मेदारी हैं, इसलिए सार्वजनिक क्षेत्र को उन्हें करना पड़ता है, जबकि निजी क्षेत्र इसके लिए बाध्य नहीं है। (vii) रिलायंस और टाटा आयरन एंड स्टील निजी क्षेत्र के उद्योगों के कुछ उदाहरण हैं, जबकि BHEL और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ उद्योग हैं। (viii) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं पाँच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पृष्ठ-32	**5x1=5**
	अथवा	

(b)	**भारत की अर्थव्यवस्था के संगठित एवं असंगठित क्षेत्रक का उदाहरणों सहित अंतर स्पष्ट कीजिए।** (i) संगठित क्षेत्रक में वे उद्यम या काम करने की जगहें शामिल होती हैं, जहाँ रोज़गार की शर्तें नियमित होती हैं; जबकि असंगठित क्षेत्र में रोज़गार की शर्तें नियमित नहीं होतीं। (ii) संगठित क्षेत्र सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं और उन्हें सरकार के नियमों और विनियमों का पालन करना होता है। ये नियम विभिन्न कानूनों में दिए गए हैं, जैसे कि कारखाना अधिनियम, न्यूनतम मज़दूरी अधिनियम, ग्रेच्युटी भुगतान अधिनियम, दुकान और प्रतिष्ठान अधिनियम आदि; जबकि असंगठित क्षेत्र इन नियमों का सख्ती से पालन नहीं करते। (iii) संगठित क्षेत्र औपचारिक प्रक्रियाओं और कार्यविधियों का पालन करता है, जबकि असंगठित क्षेत्र ऐसा नहीं करता। (iv) संगठित क्षेत्र में काम करने वाले मज़दूरों को रोज़गार की सुरक्षा प्राप्त होती है, जबकि असंगठित क्षेत्र में ऐसी कोई सुरक्षा नहीं होती। (v) संगठित क्षेत्र में काम करने के घंटे तय होते हैं, और यदि कर्मचारी अतिरिक्त घंटे काम करते हैं, तो उन्हें इसके लिए भुगतान किया जाता है। जबकि असंगठित क्षेत्र में काम करने के घंटे तय नहीं होते। (vi) संगठित क्षेत्र में काम करने वाले मज़दूरों को चिकित्सा लाभ मिलते हैं, जबकि असंगठित क्षेत्र में ऐसी सुविधा उपलब्ध नहीं भी हो सकती है। (vii) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं पाँच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।** पृष्ठ-30	**5x1=5**
38.	**दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:** **सहकारी समितियों से ऋण** बैंकों के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में सस्ते ऋण का एक अन्य स्रोत सहकारी समितियाँ हैं । सहकारी समिति के सदस्य अपने संसाधनों को कुछ क्षेत्रों में सहयोग के लिए एकत्र करते हैं । कई प्रकार की सहकारी समितियाँ संभव है, जैसे–किसानों, बुनकरों एवं औद्योगिक मज़दूरों इत्यादि की सहकारी समितियाँ । कृषक सहकारी समिति सोनपुर के नज़दीक एक गाँव में काम करती है । इसके 2300 किसान सदस्य हैं । यह अपने सदस्यों से जमा प्राप्त करती है । इस जमा पूँजी को ऋणाधार मानते हुए, इस सहकारी समिति ने बैंक से बड़ा ऋण प्राप्त किया है । इस पूँजी का इस्तेमाल सदस्यों को कर्ज़ देने के लिए किया जाता है । यह ऋण लौटाने के बाद कर्ज़ का दूसरा दौर शुरू किया जा सकता है । कृषक सहकारी समिति कृषि उपकरण खरीदने, खेती तथा कृषि व्यापार करने, मछली पकड़ने, घर बनाने और अन्य विभिन्न प्रकार के ख़र्चों के लिए ऋण मुहैया कराती है । **38.1 सहकारी समितियाँ ऋण के किस स्रोत के अंतर्गत आती हैं?** (1) - ऋण के औपचारिक स्रोत। **38.2 सहकारी समितियों के लिए ऋण के प्रमुख स्रोतों का उल्लेख कीजिए?** (1) - बैंक। **38.3 ग्रामीण विकास में सहकारी समितियों की भूमिका को स्पष्ट कीजिए। (2X1=2)** (i) ये ग्रामीण लोगों को बिना किसी समर्थक ऋणाधार के ऋण प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं।	**1+1+ 2=4**

	(ii) ये कृषि उपकरण खरीदने, खेती करने, कृषि व्यापार, मछली पालन, घर बनाने और विभिन्न अन्य खर्चों के लिए भी ऋण प्रदान करते हैं। (iii) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।**	

प्रश्न सं. 9 और 18 के लिए मानचित्र

Map for Q. No. 9 and 18
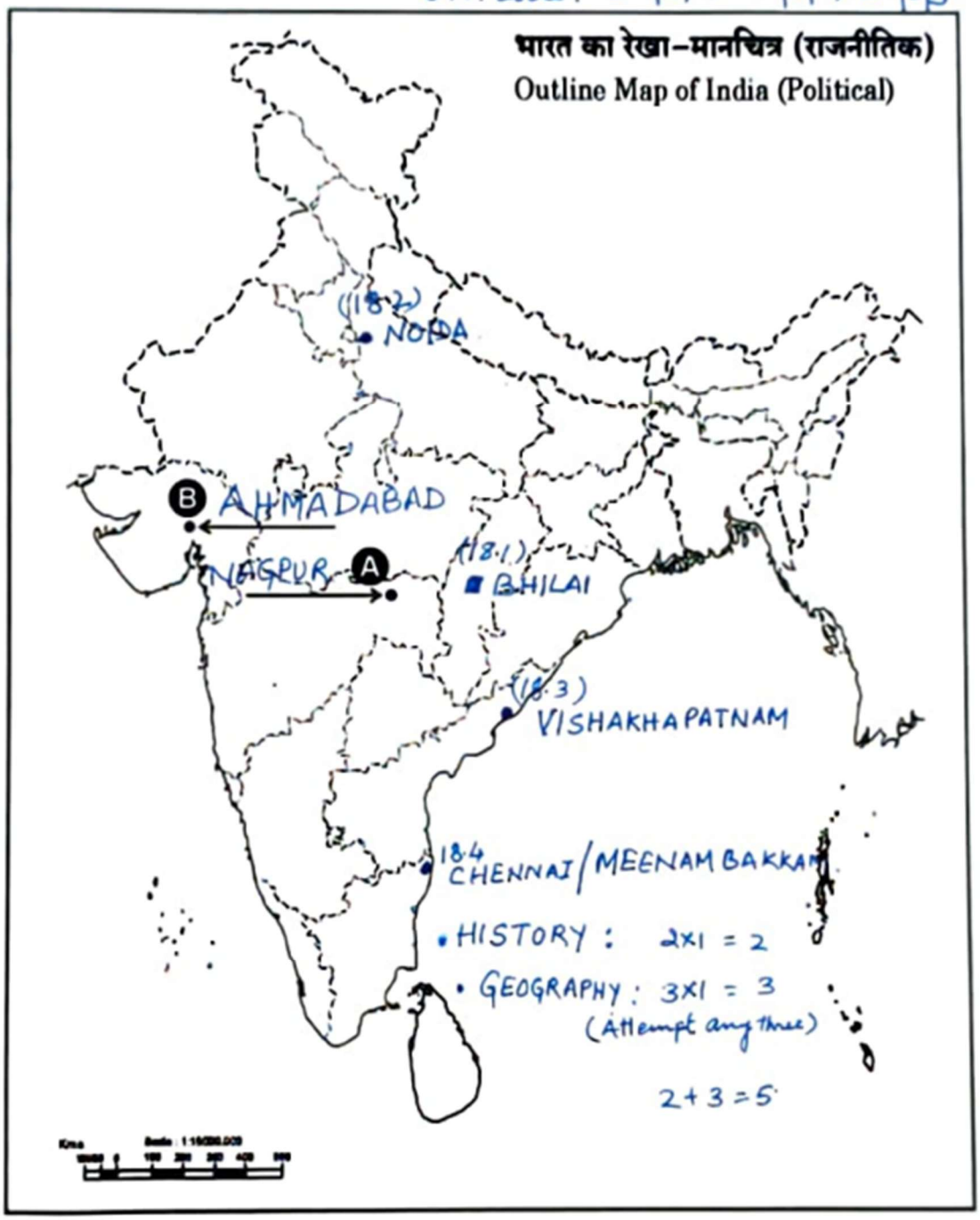
Q.P. Code: 32/8/1, 32/8/2, 32/8/3